Vol 2 Issue 10 April 2013

Impact Factor : 0.1870

ISSN No :2231-5063

Monthly Multidisciplinary
Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

IMPACT FACTOR : 0.2105

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Golden Research Thoughts
Volume 2, Issue. 10, April. 2013
ISSN:-2231-5063
Available online at www.aygrt.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

वैश्विकरण और मीडिया की नैतिकता

विवेक विश्वास , धनेश कुमार जोशी

पी–एच.डी. शोधार्थी,संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र,महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा.

सारांशः

वर्तमान दौर सूचनाओं का है। उदारीकरण, निजीकरण और वैश्विकरण के मूल में प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप में सूचनाओं की अभिव्यक्ति है। हालांकि, वैश्विकरण में अधिकतम सामाजिक और सांस्कृतिक अन्तर्विरोध निहित हैं। इसका संबंध पूंजीवाद तथा उसमें निहित शक्तियों के अन्तर्विरोधों से है। अपनी प्रकृति के अनुरूप वैश्विकरण प्राथमिक रूप से आजादी और आत्मनिर्भरता को धीरे–धीरे समाप्त कर लक्षित समूह को पर–आश्रित बनाकर गुलाम मानसिकता में जकड़ लेता है। पूंजीवाद तथा उसमें निहित शक्तियां यह कार्य वैश्विक संचार प्रणाली तथा जनमाध्यमों के जरिये करता है। परिणामस्वरूप अब "समाज में नयी परिस्थितियों के अनुरुप नयी कतारबंदी शुरु हुई है"[1]। यह कतारबंदी उन चंद लोगों की है जिनके हाथों में अधिकतम संसाधन और आर्थिक शक्तियां निहित हैं। यद्यपि, ये कतारबंद लोग किसी एक देश और समाज से नहीं आते, परन्तु अलग–अलग देश और समाज से होने के बावजूद भूमंडलीकरण के ये पैरोकार स्वयंभू शैली में अपने को विश्व नागरिक घोषित कर बड़ी आसानी से अपने मूल उद्देश्यों और व्यावसायिक हितों को छुपा लेते हैं। अब स्वयंभू शैली में अपने को विश्व नागरिक घोषित करने वाले ये वैश्विक रणनीतिकार अपने मूल उद्देश्यों और व्यावसायिक हितों को पूरा करने के लिए बहुस्तरीय संचार प्रणाली के निमित्त मीडिया का इस्तेमाल बहुत ही सधे कदमों के साथ करते हैं। इन्हीं रणनीतियों के भंवर में फंस कर हमारे विभिन्न जनमाध्यम जो पहले अपने पेशे को सामाजिक सरोकार से जोड़कर पत्रकारिता का नाम देते थे, वे अब बाजार से जुड़कर मीडिया के रूप में अपनी पहचान बनाने में लगे हैं। यहाँ सवाल 'पत्रकारिता' शब्द की जगह 'मीडिया' शब्द के प्रयोग का नहीं है, बल्कि शब्दों के साथ उद्देश्यों, सरोकारों और नैतिक मूल्यों में बदलाव का है।

प्रस्तावना :–

हमारी देशज परंपरा में जिस तरह 'मम्मी' शब्द से 'माँ' जैसा भाव और लगाव नहीं जुड़ सकता, ठीक उसी प्रकार मीडिया कभी पत्रकारिता के उद्देश्यों और सरोकारों को आत्मसात नहीं कर सकता। यह सर्वविदित है कि वैश्विकरण का सीधा–सीधा संबंध पूंजीवाद से है तथा नैतिकता एक सामाजिक मूल्य है। और, ऐसी मान्यता है कि नैतिकता नहीं होती। सामाजिक–आर्थिक संदर्भ में यहाँ यह भी स्पष्ट करना बेहद जरूरी है कि धन और पूंजी दोनों अलग–अलग चीजें हैं। जहां एक ओर धन का अस्तित्व नैतिक और सामाजिक मूल्यों के साथ होता है, वहीं दूसरी ओर पूंजी हमेशा खुद को इन मूल्यों से परे रखती है। गोया पूंजी का उदेश्य ज्यादा–से–ज्यादा मुनाफा कमाना तो होता ही है, साथ ही तेजी से पूंजी में इजाफा करने के लिए परिस्थियों का निर्माण करना भी होता है । यही वजह है कि पत्रकारिता जैसे ही मीडिया व्यवसाय के रूप में तब्दील हुई, वैसे ही, भले ही मीडिया व्यवसाय को अन्य व्यावसायों से अलग करके देखा जाता रहा, लेकिन आज का मीडिया प्रबंधन अन्य व्यवसायों की तरह मुनाफे और पूंजी के विस्तार के लिए मीडिया का इस्तेमाल भी दुधारू गाय की तरह करने लगी और इसके लिए हर सीमाएं एवं वर्जनाएं टूटने लगीं, चाहे इसके लिए उन्हें किसी भी हद तक क्यों न जाना पड़े। और, इस प्रवृत्ति के चलते पत्रकारिता के क्षेत्र में लगातार सामाजिक और नैतिक मूल्यों का ह्रास महसूस किया जा रहा है।

वैश्विकरण का पर्यावाची शब्द है–भूमंडलीकरण और "भूमंडलीकरण के आलोचकों का कहना है कि यह बड़े व्यवसायों और अमीरों के समर्थन में है और श्रम, पर्यावरणवादियों, गरीबों और उन सभी की क्षमताओं को कम करके आंकती है जो अपनी नियति का निर्माण खुद करते हैं। भूमंडलीकरण में ऐसी विशिष्ट अलोकतांत्रिक प्रवृत्ति को भी देखा जाता है जो राष्ट्रीय सरकारों को बाध्य करती है कि या तो वे भूमंडलीकरण रूप में गतिशील पूंजी की जरूरतों को पूरा करें या फिर आर्थिक रूप से अपने सफाए का सामना करने के लिए तैयार हो जाएं।"[2] यहाँ वैश्विकरण (भूमंडलीकरण) के आलोचकों ने वैश्विकरण के उस अलोकतांत्रिक प्रवृत्ति की ओर इशारा किया है जो पूंजी की जरूरतों को पूरा नहीं करने की स्थिति में राष्ट्रीय सरकारों को भी आर्थिक रूप से सफाए का सामना करने के लिए मजबूर कर सकती है। इन परिस्थितियों में मीडिया आखिर कब तक पूंजी और बाजार के आगे नतमस्तक हुए बिना नैतिकता का ध्वजवाहक बना रहेगा। वह भी तब जबकि इस तथ्य से हम सब अवगत हैं कि सामाजिक मूल्य और नैतिकता वस्तुनिष्ठ चीजें हैं और एक ही समाज में रहने वाले अलग–अलग समूहों और व्यक्तियों के लिए भी नैतिकता की परिभाषा एवं मानदंड अलग–अलग हो सकते हैं। फिर ऐसे दौर में जब हमारी सरकार सूचना एवं प्रसारण क्षेत्र में एफडीआई की सीमा 49 प्रतिशत से बढ़ाकर 74 प्रतिशत कर दी है, हम मीडिया से किस हद तक नैतिक होने का उम्मीद हम कर सकते हैं?

चूँकि, बाजार को अपना विस्तार करना है, इसलिए उसे विदेशी पूंजी की जरूरत है। स्वाभाविक है कि पूंजी की जरूरतों को पूरा नहीं करने की स्थिति में सरकार को आर्थिक रूप से अपने सफाए का डर सता रहा है। फलस्वरूप अन्य क्षेत्रों के साथ–साथ सूचना एवं प्रसारण क्षेत्र

Title :*वैश्विकरण और मीडिया की नैतिकता*
Source:Golden Research Thoughts [2231-5063] *विवेक विश्वास , धनेश कुमार जोशी* **yr:2013 vol:2 iss:10**

में भी एफडीआई की सीमा 49 प्रतिशत से बढ़ाकर 74 प्रतिशत कर दी गई है। अब सवाल यह है कि जब पूंजी की जरूरतों के आगे ताकतवर सरकारें नतमस्तक हैं, तब खुद मुनाफा की इच्छा रखने वाले मीडिया समूहों और इन समूहों के पूंजीपति मालिकानों से हम कैसे उम्मीद रखें कि वह पूंजी की जरूरतों के आगे अपने नैतिक मूल्यों की बलि नहीं देंगे। अमेरिका के जनसंचार अध्येता एडवर्ड एस. हर्मन और रॉबर्ट मैक्चेस्नी का भी मानना है कि "भूमंडलीय निगम पूंजी की ताकत सिर्फ आर्थिक और राजनितिक ही नहीं है, बल्कि इसका विस्तार विचार की बुनियादी मान्यताओं और रूपों तक है, जिसे कि हम विचारधारा कहते हैं।"[3] अगर कोई पूंजी विचार की बुनियादी मान्यताओं और रूपों तक को प्रभावित करती है तो उसके साथ ही स्थापित नैतिक मूल्य भी बदलेंगे। क्योंकि, किसी भी बुनियादी मान्यताओं का सृजन बगैर नैतिक मूल्यों के समावेश के नहीं हो सकता।

लक्ष्य और उद्देश्य

इस अध्ययन के लक्ष्य और उद्देश्य निम्नलिखित है –

1. जन की ज्ञानदृवर्धन , आर्थिक उत्थान व विकास में जनमाध्यमों की भूमिका को जानने का प्रयत्न करना।
2. विश्व ग्राम की अवधारणा और भूमंडलीकरण के अंतरसंबंधों को जानने का प्रयास करना ।
3. वैश्वीकरण के उपरांत जनमाध्यमों का समाज में समाजिक तथा सांस्कृतिक प्रभावों की भूमिका का अध्ययन करना ।
4.वैश्वीकरण के पश्चात जनमाध्यमों में नारी की सामाजिक, आर्थिक ,राजनैतिक ,सांस्कृतिक, भोगोलिक चित्रण का अध्ययन करना
5. जनमाध्यम समाज में क्या प्रस्तुत कर रहा है ?और समाज उसे किस रूप में ग्रहण करता है । क्या जन माध्यम राजनीतिक विचारो से युक्त है या वैश्वीकरण अप्रत्यक्ष ओपनिवेशिक विचार है आदि महत्वपूर्ण तथ्यो पर प्रस्तुत शोध आलेख में प्रकाश डालने का प्रयास किया जाएगा

पद्धति– वर्तमान अध्ययन का दायरा , (महाराष्ट्र) वर्धा के चुनिन्दा शहरी क्षेत्र निवासरत 20 से 60 उम्र के 100 नागरिक थे ।इस प्रश्नावली में उन उत्तरदाताओं को शामिल किया गया है जिनकी शिक्षा स्नातक से पीएचडी तक थी जिससे भूमंडलीकरण का आर्थिक सामाजिक राजनैयतिक सांस्कृतिक प्रभाव का विश्लेषण प्राप्त हो सके । वर्तमान माइक्रो स्तरीय जांच , व्यवस्थित ढंग से तैयार की गई एक प्रश्नावली की सहायता से किया गया है। द्वितीयक आकड़ों का संग्रहण , उपलब्ध पुस्तकों , जर्नलो और अन्य प्रकाशित सामाग्री से किया गया है ।

परिणाम –

1. पाया गया कि भूमंडलीकरण के पैरोकारों ने स्वयंभू शैली में अपने को विश्व नागरिक तो घोषित तो कर दिये है पर अभी भी भारत जैसे विकास शील राष्ट्र के लिए विश्व ग्राम की संकल्पना मात्र कपलनाओं तक सीमित है विश्व के प्रथम राष्ट्रो द्वारा सूचनाओं के मुक्त संचार के साथ न्याय और समानता को जोड़कर देखा नहीं जा रहा है और दूसरी ओर भारत जैसे तीसरी दुनिया के राष्ट्र में आज भी सूचनाओं का प्रवाह समाज में समान रूप से नहीं हो पा रहा है जिसका एक बड़ा करण आर्थिक असमानता है ।

2. 95ः उत्तरदाताओं का मानना है कि भूमंडलीकरण ने मास कल्चर को माल संस्कृति और सुंदर माल में तब्दील कर दी है । जिसमे नारी कि छवि को मात्र उपभोग और अश्लीलता के प्रस्तुत किया जा रहा है । जिससे पितृतात्मक सत्ता मजबूत होती जा रही है । और नारी इन माध्यमों के बीच अपनी छवि को भूल सी जा रही है । 5ः लोगो का मानना है कि नारी कि छवि को भूमंडली करण ने मजबूती प्रदान कि है ।

3. 88ः लोगो का मानना है कि वैश्वीकरण के पश्चात मीडिया में चेतना के स्थान पर अंधविश्वास और कुरुतियाँ हवी हुई है ।12ः लोग इससे असहमत है । वैसे भी कहा जाता है कि ग्लोबलाइजेशन का अर्थ है तुम्हें किसी से क्षमा मांगने कि जरूरत नहीं है । जिसमे हम नैतिकता कि बात करे तो यह बाजार को नकारने वाली बात होगी ।

4. 90ः उत्तरदाताओं का मानना है की भूमंडलीकरण के प्रभाव में आकर जनमध्यमों ने उपभोक्ता और उपभोकतवाद दोनों को एक दूसरे के पूरक बना दिया है बल्कि उन पर भी अपना प्रभाव डालती है जो सत्ता के नीति निर्धारक है । क्योकी अभिवयक्ति की आजादी को वैश्वीकरण ने व्यवसायिक अभिवयक्ति की आजादी के रूप में परिवर्तित कर दिया है। 10ः उत्तरदाता इन प्रभावों को असहमति प्रदान करते है ।

5. 100ः उत्तरदाता इस बात में सहमत है कि वैश्वीकरण के प्रभाव के फलस्वरूप जन माध्यमों ने जन को आम से खास बनाया है जिसे आज हम सोशल नेटवर्किंग के रूप में अभिवयक्ति का एक सशक्त माध्यम के रूप में प्रयोग कर नव समाजवाद के अवधारणा की ओर अग्रसर हो रहे है ।

निष्कर्ष .

किसी देश या समाज–विशेष की देखरेख में संचालित होने वाले लोक–प्रसारण माध्यमों के सामाजिक सरोकार और उनके कार्य–भार जहां उन्हें औरों से अलग करते हैं, वहीं उस समाज के प्रति बढ़ती जवाबदेही और क्रिया–कलाप उनकी भूमिका को राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में महत्वपूर्ण भी बना देते हैं।"[4] परन्तु वैश्विकरण के दौर में मीडिया समाज से अधिक बाजार के प्रति जवाबदेह हो गई है और नैतिकता जैसे मूल्यों को शायद पुराने फैशन के रूप में देखा जाने लगा है। यही वजह है कि "सीमित स्वामित्व की ओर बढ़ते आधुनिक रुझान के कारण लोकतंत्र के लिए आवश्यक सांस्कृतिक परिस्थितियों को नकारा जा रहा है। विडंबना यह है कि कई बार ऐसा स्वतंत्रता के नाम पर किया जा रहा है।"[5] सीधे शब्दों में कहा जाए तो 'वैश्विकरण' के विस्तार और मजबूती के लिए मीडिया का बेजां दोहन किया जा रहा है जिसके लिए नैतिकता को नेपथ्य के पीछे धकेल दिया गया है। विश्व की शक्तिमान राजनितिक, आर्थिक और सांस्कृतिक ताकतों के द्वारा विकासशील और पिछड़े देशों पर नियार्तित विचारधारा और संस्कृति थोपी जा रही है, पश्चिमीकरण की घुट्टी इस तरह पीला दी गई है कि नैतिकता को हम रूढ़िवाद से जोड़कर देखने लगे हैं। अगर भविष्य के तरफ हमें देखना है तो किसी भी परिस्थिति में वैश्विकरण के इस जकड़न से खुद को आजाद करना होगा तथा नैतिक मूल्यों का बचाव करते हुए मीडिया के गिरते साख को बचाना होगा, जिससे कि यह सुनने से बचा जा सके कि मीडिया की नैतिकता! यह कैसा मजाक है!!।

संदर्भ सूची :

1.चतुर्वेदी, जगदीश्वर कलकत्ता विश्वविद्यालय, प्रोफेसर, हिन्दी विभाग.
http://jagadishwarchaturvedi.blogspot.in/2010/05/blog-post_14.html

2.मैक्चेस्नी, रॉबर्ट डब्ल्यू– वुड, इलेन मिकिसन्स– फॉस्टर, जॉन बेलेमी, पूंजीवाद और सूचना का युग, ग्रंथ शिल्पी (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली पृ.सं.– 29–30.
3.पारख, जवरीमल्ल, जनसंचार माध्यमों का वैचारिक परिप्रेक्ष्य, ग्रंथ शिल्पी (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली पृ.सं.– 122.
4.भारद्वाज, नंद, संस्कृति, जनसंचार और बाजार, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.सं.– 38.
5. विलियम्स, रेमंड (अनुवादक– वर्मा, सत्यम एवं झा, प्रमोद), ग्रंथ शिल्पी (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली पृ.सं.– 30.

सहायक पुस्तकें :

1.चतुर्वेदी, जगदीश्वर एवं सिंह, सुधा, भूमंडलीकरण और ग्लोबल मीडिया, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, (प्रा.) लि., नई दिल्ली।
2.पचौरी, सुधीश, साइबरस्पेस और मीडिया, प्रवीण प्रकाशन, नई दिल्ली।
3.पचौरी, सुधीश, दूरदर्शनः विकास से बाजार तक, प्रवीण प्रकाशन, नई दिल्ली।
4.पारख, जवरीमल्ल, जनसंचार माध्यमों का वैचारिक परिप्रेक्ष्य, ग्रंथ शिल्पी (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली।
5.बंधु, प्रांजलि (अनुवादक– प्रकाश विजय), भारतीय प्रसार–माध्यमः विदेशी पूंजी की गुलामी का दौर, संवाद प्रकाशन, मुंबई–मेरठ।
6.भारद्वाज, नंद, संस्कृति, जनसंचार और बाजार, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली।
7.मैक्चेस्नी, रॉबर्ट डब्ल्यू– वुड, इलेन मिकिसन्स– फॉस्टर, जॉन बेलेमी, पूंजीवाद और सूचना का युग, ग्रंथ शिल्पी (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली।
8.विलियम्स, रेमंड (अनुवादक– वर्मा, सत्यम एवं झा, प्रमोद), ग्रंथ शिल्पी (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली।
9.शिलर, हरबर्ट आई. (अनुवादक– सिंह, राम कविन्द्र), संचार माध्यम और सांस्कृतिक वर्चस्व, ग्रंथ शिल्पी (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली।
10.हरमन, एस. एडवर्ड एवं मैक्चेस्नी, डब्ल्यू रॉबर्ट, भूमंडलीय जनमाध्यमः निगम पूंजीवाद के नए प्रचारक, ग्रंथ शिल्पी (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली।

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net